मुहावरे भी कम मज़ेदार नहीं होते! मेरी दोस्त इस्मत मुहावरों को दो वर्गों में बाँटती है। एक वे मुहावरे जो असम्भव हैं - जैसे, आसमान सर पे उठाना, लोहे के चने चबाना, बाल की खाल निकालना (कभी आज़मा कर देखना)। और दूसरे वे मुहावरे जो सम्भव हैं जैसे, कमर कसना, आँख दिखाना। वैसे तुम इस मुहावरे को किस वर्ग में रखोगे – मुँह में दही जमाना।

अब सवाल पर आ जाएँ – सवाल यह है कि क्या तुम इन दोनों वर्गों के लिए दस-दस मुहावरे ढूँढ सकते हो?

माथापच्ची

क्या तुम दस सिक्कों को ऐसे जमा सकते हो कि कुल 5 लाइनें हों और हर लाइन में 4 सिक्के हों? इसके कम से कम दो उत्तर हो सकते हैं।

मैंने अपनी गाड़ी पर नम्बर प्लेट लगवाई। गलती से प्लेट उल्टी लग गई। मज़े की बात यह थी कि अब भी उस पर लिखे नम्बर पढ़े जा सकते थे। लेकिन वह सही नम्बर से 78633 ज़्यादा थे। क्या तुम सही नम्बर बता सकते हो?

ट्रेन या बस अड्डे पर चाय वाले बोलते हैं –

चाय बोलो, चाय!

वे हमसे *चाय* शब्द बोलने को नहीं कह रह होते हैं। यह कहकर वे हमसे पूछना चाहते हैं कि क्या हमें चाय चाहिए। इसी तरह, कंडक्टर आकर हमसे कहते हैं -

टिकिट बोलो, टिकिट!

क्या तुम ऐसे पाँच वाकये बता सकते हो जहाँ हम कहते कुछ और हैं और उससे हमारा आशय कुछ और होता है?

क्या तुम एक ऐसी संख्या बता सकते हो जो अपने अंकों के जोड़ से तीन गुनी अधिक हो?

इस तारीख को ध्यान से देखो। 8/8/64 यानी कि आठ अगस्त सन् चौसठ। इसकी खासियत यह है कि शुरू के दो अंकों का गुणनफल आखिर के दो अंकों के बराबर है। क्या तुम ऐसी ही कुछ और तारीखें बता सकते हो?

अगस्त में कौन-कौन से रंग के फल और सब्ज़ियाँ बाज़ार में दिखती हैं?

चित्रः अतनु राय